# अनुपजाऊ बारानी क्षेत्रों के लिए लाभकारी है मेहंदी

**मोती लाल मीणा, ऐश्वर्य डूडी** और **धीरज सिंह**
भाकृअनुप-काजरी, कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली-मारवार-306401 (राजस्थान)

"मेहंदी जिसे 'हिना' भी कहते हैं, का वानस्पतिक नाम लॉसोनिया इनर्मिस है। यह लाइथ्रिएसी कुल का सदस्य है। मेहंदी को संस्कृत में मेहन्दिका, बंगला में मेहंदी, मराठी में मेंधी और गुजराती में मेंदी के नाम से पुकारा जाता है। यह एक बहुशाखीय, बहुवर्षीय एवं व्यावसायिक फसल है। इसकी पत्तियों का मुख्य तौर पर उत्पादन प्राकृतिक रंग (डाई) तैयार करने के लिए किया जाता है। यह पौधा सम्पूर्ण भारत में बहुतायत में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त यह मिस्र, अफ्रीका, अरब और ईरान आदि देशों में भी मिलता है। यह पौधा ईरान का मूल निवासी है। मेहंदी, राजस्थान की एक महत्वपूर्ण फसल है। राजस्थान के पाली जिले में मेहंदी का उत्पादन सबसे अधिक होता है। अधिकतर किसान इसकी पत्तियों को सूखे पाउडर के रूप में पैकिंग कर निर्यात करते हैं।"

मेहंदी एक झाड़ीदार छोटा वृक्ष है। इसकी शाखाएं कांटेदार, नुकीले पर्ण अभिमुख क्रम में, लंबे, अग्र भाग की ओर कम चौड़े, एवं सरल धार वाले होते हैं। इसके पुष्प हरिताभ श्वेत, गुच्छों में सुगंधित, शाखाग्र फल गोल व कई बीजों वाले होते हैं। एक बार लगाने के बाद कई वर्षों तक इसकी फसल ली जा सकती है। इसकी फसल सितंबर-अक्टूबर तक काट ली जाती है तथा फरवरी से पुन: पौधा स्फुटन करने लगता है।

मेहंदी की सूखी पत्तियों को अलग करना

मेहंदी के पत्तों, छाल, फल और बीजों का उपयोग विभिन्न औषधियों के उत्पादन में किया जाता है। औषधीय रूप से मेहंदी कफ व पित्तनाशक, शोथहर तथा वर्णशोधक होती है। इसके फल निद्राजनक, शोथहर और ज्वरनाशक तथा बीज अतिसार एवं प्रवाहिका होते हैं। पत्तियों और फूलों से तैयार पेस्ट कुष्ठ रोगों में उपयोगी होता है। इसकी पत्तियों का रस, सिरदर्द और पीलिया के निवारण में प्रयोग किया जाता है। मेहंदी में लासोन 2-हाइड्रॉक्सी, 1-4 नाप्थ विनोन, रेजिन, टेनिन गौलिक एसिड, ग्लूकोज, वसा, म्यूसीलेज व क्विनोन आदि तत्व पाये जाते हैं। इसकी खेती कंकरीली, पथरीली और हल्की, भारी सभी तरह की भूमि पर की जा सकती है। यह पौधा गर्म व शुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों में सरलता से उगता है। बीजों व कलमों द्वारा मेहंदी का प्रवर्धन भी किया जाता है। मार्च-अप्रैल में छायादार स्थान पर तैयार नर्सरी में बीजों को छिड़कना चाहिए। एक हैक्टर भूमि पर छिड़काव करने के लिए 20 कि.ग्रा. बीजों की मात्रा पर्याप्त होती है। 14 से 20 दिनों के अंतराल पर बीजों का अंकुरण होता है। जब पौधे की ऊंचाई 40-50 सें.मी. तक हो तब उन्हें खेत में सीधी लाइनों में 50 सें.मी. की दूरी पर रोपना चाहिए। इस समय खेत की मिट्टी अच्छी तरह गीली होनी चाहिए। मेहंदी की खेती में सिंचाई नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे पत्तों के रंजक तत्वों में कमी आ जाती है। रोपण के एक माह बाद खेत में निराई कर अनावश्यक खरपतवारों को बाहर निकाल देना चाहिए। मार्च-अप्रैल में इसकी प्रथम कटाई जमीन से लगभग 2-3 इंच ऊपर से करनी चाहिए।

आगामी वर्षों में प्रतिवर्ष दो कटाई करनी चाहिए, जिनमें से प्रथम कटाई अक्टूबर-नवंबर एवं दूसरी कटाई मार्च में करनी चाहिए। कटाई कर इसे छोटी-छोटी ढेरियों में सुखाकर संग्रहित करना चाहिए। प्रतिवर्ष 15-20 क्विंटल सूखे पत्ते प्रति हैक्टर की दर से प्राप्त होते हैं। मेहंदी एक बहुवर्षीय सूखारोधी झाड़ीनुमा पौधा है। राजस्थान में इसकी खेती पत्तियों में पाये जाने वाले रंग (1 से 2.5 प्रतिशत लासोन) के लिए की जाती है, जो कि केश रंगने और पारंपरिक साज-सज्जा में काम आता है। इसके अलावा फूलों से प्राप्त सुगंधित तेल (इत्र) और पौधे के विभिन्न औषधीय गुण सुप्रसिद्ध हैं। स्त्रियां इसकी पत्तियां पीसकर हाथ-पांव में लाल रंग रंगने के काम में उपयोग करती हैं। इसके पुष्प, हरिताभ-श्वेत, गुच्छों से सुगंधित शाखाग्र खिलते हैं तथा फल गोल एवं कई बीज वाले होते हैं। मेहंदी के पौधे सम्पूर्ण